प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

vii. Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) .....को यात्रियों का राजा कहा जाता है।

(ii) सिन्धु सभ्यता के लोगों को .....धातु की जानकारी नहीं थी।

(iii) चन्दबरदायी कृत 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति ..... से हुई थी।

(iv) गुलाम वंश का संस्थापक.....था।

(v) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना वर्ष.....में हुई थी।

Fill in the blanks.

(i) .....is called the King of Travelers.

(ii) The people of Indus Valley were aware of .....metal.

(iii) According to Prathiraj Raso by Chandabardai the Rajputs originated from .....

(iv) .....was the founder of Slave Dynasty.

(v) The Indian National Congress was founded in the year.....

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए –

(अ) शेरशाह सूरी ने हुमायूं को किस युद्ध में हराया था –

(i) पानीपत क युद्ध में (ii) चौसा के युद्ध में

(iii) हल्दीघाटी के युद्ध में (iv) खानवा के युद्ध में

(ब) बंगाल विभाजन हुआ –

(i) 1905 में (ii) 1928 में

(iii) 1930 में (iv) 1923 में

(स) रानी अवन्तीबाई का संबंध था –

(i) ग्वालियर से (ii) रामगढ़ से

(iii) गढ़ामंडला से (iv) झांसी से

(द) सिन्धु सभ्यता में प्रसिद्ध बन्दरगाह प्राप्त हुआ है –

(i) रोपड़ से (ii) कालीबंग से

(iii) लोथल से (iv) हड़प्पा से

(इ) शिवाजी ने वध किया था –

(i) शाइस्ता खां का (ii) अफलज खां का

(iii) राजा जयसिंह का (iv) शेरशाह का

Choose the correct answer for the following.

(a) In which war Shehshah Suri defeated Humayun -

(i) In the battle of Panipat (ii) In the battle of Chousa

(iii) Haldi Ghati (iv) Khanva

(b) The partition of Bengal took place in -

(i) 1925 (ii) 1928

(iii) 1930 (iv) 1923

(c) Rani Awanti Bai belonged to -

(i) Gwalior (ii) Ramgarh

(iii) Gadhamandala (iv) Jhansi

(d) The famous port recovered from Indus Civilization -

(i) Ropad (ii) Kalibang

(iii) Lothal (iv) Harrapa

(e) Shivaji killed -

(i) Shaistha Kha (ii) Afzal Kha

(iii) Raja Jay Singh (iv) Shershah

प्रश्न 3. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ियां बनाइये–

अ		**ब**
(अ) झण्डा सत्याग्रह	–	बंगाल
(ब) तात्या टोपे	–	उज्जैन
(स) अभिनव भारत	–	जबलपुर
(द) अनुशीलन समिति	–	शिवपुरी
(इ) भर्तुहरि	–	महाराष्ट्र
	–	ग्वालियर
	–	पंजाब

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'

	A	-	B
(a)	Jhanda Styagrah	-	Bangal
(b)	Tatya Tope	-	Ujjain
(c)	Abhinav Bharat	-	Jabalpur
(d)	Anushilan Samiti	-	Shivpuri
(e)	Bharthari	-	Maharashtra
		-	Gwalior
		-	Punjab

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए।

1. ऋग्वैदिक कालीन लोगो का मुख्य व्यवसाय क्या था?
2. 'मत्त विलास प्रहसन' का लेखक कौन था?
3. चोल शासक राजेन्द्र चोल ने अपनी नई राजधानी किस स्थान पर स्थापित की थी?
4. गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे शक्तिशाली व पराक्रम शासक कौन था?
5. बाजार नियंत्रण नीति किस सुल्तान ने बनाई थी?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. What was the Chief occupation of the Rigvedic People?
2. Who was the writer of Matt Vilas Prahsan?
3. Where did the Chola king Rajendra established his new capital?
4. Who was the most powerful and brave king in the Gurjar Pratihar Dynasty?
5. Which Sultan made the market control policy?

प्रश्न 5. निम्नलिखित वक्यों में सत्य एवं असत्य बताइये –

(i) जैन धर्म के मूल ग्रंथों की रचना ''प्राकृत'' भाषा में हुई है।

(ii) 'भीम बैटिका' मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में है।

(iii) शैव धर्म का एक सम्प्रदाय कापालिक है।

(iv) पुरापाषाण युग का मानव लेखन कला से परिचित था।

(v) अलाउद्दीन खिजली ने तांबे के सिक्कों का प्रचलन किया था।

Write true or false.

(i) The original texts of Jain religion were written in Pali language.

(ii) Bhim Betika is located in Hoshangabad district of Madhya Pradesh.

(iii) One sect of Shaiva religion is Kapalik.

(iv) The pre stone age man aware of calligraphy.

(v) Allahuddin Khilgi introduced Copper Coins.

प्रश्न 6. बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्यों का विवरण दीजिए।

Describe the four Arya-Satya of Buddhism.

अथवा

Or

मोहन जोदड़ो में प्राप्त विशाल स्नानागार के विषय में लिखिए।

Write about the large Bathing place in the Mohan Jodaro.

प्रश्न 7. एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में समुद्र गुप्त का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate Samudra Gupta as competent statesman.

अथवा

Or

सम्राट अशोक और कलिंग के बीच हुए युद्ध का वर्णन कीजिए।

Describe the war between Ashok and Kaling.

प्रश्न 8. मथुरा कला शैली की चार विशेषताएं लिखिए।

Write four features of the Mathura style of Art.

अथवा

Or

गुप्तकाल में हुई वैज्ञानिक प्रगति के विषय में लिखिए।

Write about the scientific progress made during the Gupta period.

प्रश्न 9. राजपूत कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति के विषय में लिखिए।

Write about the conditions of women during the Rajput period.

अथवा

Or

पल्लव वास्तुकला की 'मामल्ल शैली' की विशेषताएं बताइए।

Describe the main features of Mamalla style of the Pallava architecture.

प्रश्न 10. अकबर की धार्मिक नीति की विशेषताएं लिखिए।

Write the important features of the religious policy of Akbar

अथवा

Or

खानवा के युद्ध में राजपूतों की पराजय के कोई चार कारण लिखिए।

Give any four reasons for defeat of Rajputs in the battle of Khanva.

प्रश्न 11. मराठों के उत्कर्ष के चार कारण लिखिए।

Give four reasons for the rise of Marathas.

अथवा

Or

शिवाजी को प्रारम्भिक जीवन में कौन सी शिक्षाएं प्राप्त हुई थी?

Which important educations did Shivaji take in his early life.

प्रश्न 12. इलाहाबाद की संधि की कोई चार शर्ते लिखिए।

Write any four conditions of the Allahabad Treaty.

अथवा

Or

प्लासी के युद्ध के कोई चार परिणाम लिखिए।

Write any four consequences of the battle of Plassy.

प्रश्न 13. नवपाषाणकाल में कृषि एवं पशुपालन से मानव जीवन में क्या परिवर्तन हुए।

What changes did the agriculture and animal rearing bring about in the life of Man of New Stone Age.

अथवा

Or

प्राचीन भारत का इतिहास जानने के लिए अभिलेखों का क्या महत्व है?

What is the importance of Archives in study of Ancient Indian History?

प्रश्न 14. भक्ति आन्दोलन की उत्पत्ति के कारणों की व्याख्या कीजिए।

Discuss the reasons for the rise of Bhakti Movement.

अथवा

Or

मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe the reasons for the failure of schemes of Mohammad Tughlak.

प्रश्न 15. औरंगजेब की दक्षिण नीति के परिणाम लिखिए।

Write about the results of the South Policy of Aurangzeb.

अथवा

Or

रानी दुर्गावती ने किस प्रकार मुगलों का प्रतिरोध किया? समझाइए।

How Rani Durgavati resisted the Moguls? Explain.

प्रश्न 16. शिवाजी की अष्टधान व्यवस्था के विषय में लिखिए।

Write about the Ashatdan system of Shivaji.

अथवा

Or

शिवाजी के चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the character and works of Shivaji.

प्रश्न 17. रेग्युलेटिंग एक्ट की प्रमुख धाराएं लिखिए।

Write the main sections of the Regulating Act.

अथवा

Or

हिन्दू धर्म और समाज में सुधाव हेतु आर्य समाज के योगदान की व्याख्या कीजिए।

Discuss the contribution of the Arya Samaj for the reforms in the Hindu Religion and Society.

प्रश्न 18. 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम के लिए उत्तरदायी प्रमुख राजनीतिक पांच कारणों की व्याख्या कीजिए।

Give any five reasons for the emergence of 1857 Freedom Movement.

अथवा

Or

अंग्रेजी शासन की आर्थिक नीतियों ने भारत के उद्योगों पर क्या प्रभाव डाला? स्पष्ट कीजिए।

What effect did the economic policy of the British have on the Indian Industry? Explain.

प्रश्न 19. भारत छोड़ो आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान लिखिए।

State the contribution of Madhya Pradesh in the Quit India Movement.

अथवा

Or

मध्यप्रदेश से कौन–कौन से गुप्तकालीन अभिलेख प्राप्त हुए है? उनसे गुप्तकाल के बारे में क्या–क्या जानकारियां प्राप्त होती है?

Which Archives of Gupta Period have been recovered in Madhya Pradesh? What information is retrieved from such archives?

प्रश्न 20. बक्सर के युद्ध के कारणों का वर्णन कीजिए व युद्ध का महत्व स्पष्ट कीजिए।

Describe the reasons behind the battle of Buxar and its importance.

अथवा

Or

भारत में डचों के पतन के कोई छः कारणों की व्याख्या कीजिए।

Give any si reasons for decline the Dutch in India.

प्रश्न 21. असहयोग आन्दोलन के कारणों की विवेचना कीजिए।

Discuss the reasons behind the Non Co-Operation Movement.

अथवा

Or

भारतीय स्वाधीनता अधिनियम की छः मुख्य धाराएं लिखिए।

Write the six main clauses of the Indian Independence Act.

– – – – – –

आदर्श उत्तर

इतिहास
History

वस्तुनिष्ठ 1 से 5 प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. रिक्त स्थान –

(i) ह्वेंनसाग

(ii) लोहा

(iii) अग्निकुंड से

(iv) कुतुबुद्दीन ऐबक

(v) 1885 ई.

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 2. सही विकल्प–

(अ) (ii) चौसा के युद्ध में।

(ब) (iv) 1905 ई.

(स) (iii) रामगढ़ से

(द) (iii) लोथल से

(इ) (ii) अफजल खां

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 3. सही जोडियां –

	अ	–	**ब**
(अ)	झण्डा सत्याग्रह	–	जबलपुर
(ब)	तात्या टोपे	–	शिवपुरी
(स)	अभिनव भारत	–	महाराष्ट्र
(द)	अनुशीलन समिति	–	बंगाल
(इ)	भर्तुहरि	–	उज्जैन

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 4. एक वाक्य में उत्तर –

(1) ऋग्वैदिक कालीन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन था।

(2) 'मत्त विलास प्रहसन' का लेखक पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन प्रथम था।

(3) चोल शासक राजेन्द्र चोल ने अपनी राजधानी गंगाई कोंड चोल पुरम में बनाई थी।

(4) गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे शक्तिशाली व पराक्रमी शासक मिहिर भोज था।

(5) बाजार नियंत्रण नीति अलाउद्दीन खिलजी की थी।

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 5. सत्य/असत्य –

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1 = 5)

उत्तर 6. महात्मा गौतम बुद्ध ने जनसाधारण को बताया कि संसार में दुःख ही दुःख है, उन्होंने दुःख से मुक्ति के लिए चार 'आर्य सत्यों' को बताया जो निम्न प्रकार है:–

1. **दुःख** :– जीवन दुखमय है, दुख का कारण क्षणिक सुखों को सुख मानना है।
2. **दुखः समुदय** :– दुःख का कारण तृष्णा, मोह और माया है इसमें तृष्णा सबसे बड़ा कारण है।

3. **दुःख निरोध** :– तृष्णा से मुक्ति ही दुःख का निवारण है। तृष्णा से मुक्ति पाकर मनुष्य निर्वाण को प्राप्त कर सकता है।

4. **दुःख निरोध मार्ग (अष्टांग मार्ग)** :– ब ुद्ध के आठ सिद्धांत जिन्हें अष्टांग मार्ग कहा गया है अपना कर मनुष्य दुःखों पर विजय प्राप्त कर सकता है, शरीर को कष्ट देकर या तपस्या से निर्वाण प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

4 अंक

(महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्यों के बिन्दु लिखने पर 2 अंक एवं वर्णन करने पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मोहन जोदड़ों की खुदाई में एक विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ। स्नानागार का जलाशय आयताकार आकार का था, यह 39 फीट चौड़ा व 8 फीट गहरा है। जलाशय की दीवार एवं फर्श पक्की ईटों का बना हुआ था, जलाशय के तल तक पक्की ईटों की सीढ़ियां बनी हुई थी, गन्दे पानी के निकास के लिए एवं ताजा जल जलाशय तक लाने के लिए पक्की नालियों की व्यवस्था थी। जलाशय के चारों ओर बरामदे है एवं पीछे कमरे बने हुए है, स्नानागार के समीप एक बड़ा कुआ था, जिससे ताजा पानी जलाशय को पक्की नालियों के द्वारा मिलता था।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 7. समुद्र गुप्त की गणना भारत के महान सम्राटों में की जाती है। वह एक विशाल साम्राज्य का निर्माता था। उसने भारतवर्ष को राजनीतिक एकता में बांधा उसने एक मजबूत केन्द्रीय सत्ता की स्थापना की जिस कारण छोटे–छोटे राज्यों के बीच पारस्परिक लड़ाई–झगड़े से राष्ट्र को मुक्ति मिली। उसने दक्षिण भारत के राज्यों को विजय कर उसके पश्चात वहां के आन्तरिक प्रशासन की स्वतंत्रता स्थानीय राजाओं को सौंप कर कुटनीतिक चतुरता का परिचय दिया। इस

कारण ये राज्य उसके परम हितेशी और भक्त बन गये। समुद्र गुप्त ने समीपवर्ती राज्यों को अपने साम्राज्य में मिलाकर उनसे मित्रता कर ली, इससे देश की सीमाओं का विस्तार हुआ, इस तरह समुद्र गुप्त ने स्वयं को एक कुशल राजनीतिज्ञ सिद्ध किया।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

अशोक ने अपने जीवन में एकमात्र विजय 'कलिंग' पर प्राप्त की थी। कलिंग मौर्य साम्राज्य की सीमा से लगा एक शक्तिशाली राज्य था। अशोक को दक्षिण से सीधे संपर्क, व्यापार एवं समुद्री मार्ग पर अधिकार करने के लिए कलिंग राज्य को मगध साम्राज्य के अधिन करना आवश्यक था, कलिंग के शासक ने अशोक के साथ वीरता पूर्वक युद्ध किया, कलिंग की शक्तिशाली विशाल सेना अशोक की सेना का दृढ़तापूर्वक मुकाबला करती रही लेकिन युद्ध के लम्बे समय तक चलने के कारण अन्ततः अशोक से हार गई। इस युद्ध में अपार जनधन की हानि हुई। एक लाख सैनिक मारे गये एक लाख पचास हजार सैनिक बंदी बनाये गये तथा कई लाख निर्दोष नागरिक भय और अभाव के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए। कलिंग के युद्ध ने अशोक के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन किए उसका ह्रदय दुख और पश्चाताप से भर गया और उसने जीवन में कभी भी युद्ध नहीं करने की प्रतिज्ञा की तथा बौद्ध धर्म को अपना लिया। कलिंग का युद्ध उसके जीवन का प्रथम और अन्तिम युद्ध था।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 8. मथुरा कला शैली की विशेषताएं :–

1. मथुरा कला शैली की मूर्तियां बलुए पत्थर की है।

2. गांधार कला की भांति मथुरा कला के अन्तर्गत भी महात्मा बुद्ध के चारों ओर प्रभामण्डल है।
3. मथुरा कला की मूर्तियों में महात्मा बुद्ध मुण्डित शीश है उनके मुख पर मूंछे नहीं है।
4. मथुरा कला की मूर्तियों में विशालता व भौतिकवादिता है लेकिन आध्यात्मिकता नहीं है।
5. महात्मा बुद्ध की मूर्तियां प्रायः खड़ी है।
6. मूर्ति का एक कंधा ढका है एक कंधा खुला है।
7. इसमें महात्मा बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएं प्रदर्शित की गई है। जैसे– जन्म, धर्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण।
8. वस्त्र शरीर से चिपटे हुए है। साधारणतया मूर्तियों में दो वस्त्र धारण किए है–ऊर्ध्व वस्त्र और अधोवस्त्र।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 8 बिन्दु लिखने पर 2 अंक एवं 4 बिन्दुओं का विस्तार करने पर 2 अंक कुल पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

गुप्तकाल में हुई वैज्ञानिक प्रगति :–

गुप्तकाल में अंकगणित, रेखाचित्र, बीजगणित, चिकित्साशास्त्र, रसायन शास्त्र एवं ज्योतिष विज्ञान की उन्नति हुई। इस काल के महान गणितज्ञ आर्य भट्ट ने अपने ग्रन्थ ''आर्य भट्टीयम्'' में दशमलव प्रणाली का वर्णन किया है और अंकगणित व बीजगणित के अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए है।

आर्य भट्ट ने प्रमाणित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा पृथ्वी व सूर्य के मध्य चन्द्रमा आ जाने से ग्रहण होता है। गुप्त काल के ज्योतिषाचार्य व धातु विज्ञान के पण्डित वराह मिहिर ने अपनी रचना

''वृहत्संहिता'' में नक्षत्र, वनस्पतिशास्त्र, भूगोल आदि विषयों का विशद विवेचन किया है।

ब्रम्हगुप्त नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रमाणित किया कि सभी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती है और पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है।

गुप्तकाल में धातु विज्ञान विकसित थी। दिल्ली के समीप महरौली में कुबुबमीनार के पास स्थित लौहस्तम्भ गुप्तकाल का है इस लौह स्तम्भ में अभी तक जंग नहीं लगा है।

गुप्त काल में चिकित्सा विज्ञान, मूल्य विज्ञान, पशु विज्ञान पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए। जिसमें हस्ति–आयुर्वेद, अश्व–शास्त्र, नवनीतकम् आदि है।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 9. राजपूत काल में स्त्रियों की दशा पूर्णरूपेण अच्छी नहीं थी। राजघरानों एवं धनवानों की कन्याओं को ही शिक्षा प्रदान की जाती थी, अन्य वर्ग के लोगों की कन्याएं शिक्षा से वंचित रहती थी, समाज में कन्याओं की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व दिया जाता था। लड़कियों का सम्मान कम था, राजघराने की कन्याएं अस्त्र शस्त्र तथा घुड़सवारी की शिक्षा प्राप्त करती थी। सामान्य रूप से पर्दा प्रथा नहीं थी परंतु राजघराने की स्त्रियां पर्दे में रहती थी। युवावस्था के प्रारंभ होते ही कन्याओं का विवाह कर दिया जाता था, समाज में सती प्रथा एवं जोहर प्रथा का चलन था, राजपूतों में कन्या बाल हत्या का भी प्रचलन था। समाज में बहु पत्नी प्रथा का प्रचलन भी था। इस काल में विधवा स्त्रियों की दशा बहुत खराब थी तथा समाज में उन्हें निम्न दृष्टि से देखा जाता था, उन्हें समाज में कोई सम्मान नहीं दिया जाता था।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

पल्लव काल की मामल्ल शैली का विकास मामल्लपुरम में हुआ था इस कारण इस शैली को मामल्ल शैली कहा जाता है। इस शैली के अन्तर्गत मुख्यतः मण्डपों अथवा रथों का निर्माण हुआ था, मण्डपों की संख्या 10 है ये महेन्द्र वर्मन शैली से अधिक विकसित है। मामल्ल शैली के रथ ''सप्त पेगोड़ा'' के नाम से प्रसिद्ध है, इनकी संख्या आठ है। ये सभी रथ (एक प्रस्तरीय मंदिर) मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से अत्यंत सुंदर और सराहनीय है। उत्कीर्ण दृश्यों के नाटकीय प्रभाव और आकृतियों की सुनिश्चिता प्रशंसनीय है।

(रथ एवं मण्डपों की सही संख्या लिखने पर 2 अंक एवं विस्तार से लिखने पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे) 2+2

उत्तर 10. ''अकबर'' ने अपने पूर्ववर्ती शासकों की धार्मिक नीति और कट्टरता की नीति को त्याग दिया। उसने उदारता एवं धार्मिक सहिष्णुता की नीति को अपनाया, मुसलमान बनाने की प्रथा का अंतर किया, तीर्थ यात्री कर की समाप्ति सन् 1573 ई. में कर दी। उसने इस्लाम को राजधर्म नहीं बनाया, उसने हिन्दुओं पर लगने वाला धार्मिक कर ''जजिया कर'' समाप्त कर दिया, इस्लाम के उलेमाओं के राजनीतिक धार्मिक, सामाजिक एकाधिकार भी समाप्त कर दिए अकबर ने धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठकर सभी धर्मों की श्रेष्ठतम बातों को लेकर एक नये धर्म ''दीन–ए–इलाही'' की स्थापना की। अकबर ने इस नये धर्म के माध्यम से भारत क हिन्दू और मुसलमानों को एक मंच पर लाने की नीति बनाई थी।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

पानीपत के युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात बाबर दिल्ली और आगरा की ओर बढ़ा वहां अधिकार करने के पश्चात वह भारत का प्रथम मुगल सम्राट

बना। अपनी सत्ता और शासन को सुरक्षित एवं संगठित करने के लिए उसे राणा सांगा की शक्ति को नष्ट करना आवश्यक था।

16 मार्च, 1527 को बाबर एवं राणा सांगा की सेना के मध्य ''खानवा'' नामक स्थान पर घोर युद्ध हुआ, राजपूत सेना मुगल सेना पर टूट पड़ी और मुगल सेना में भगदड़ मचा दी, परंतु बाबर की कुशल रणनीति, तुलुगमा युद्ध पद्धती तथा तोपो की गोलाबारी से राणा सांगा की सेना को पीछे हटा दिया, तोप की भयानक गोलाबारी से राजपूत सेना युद्ध के मैदान से भागने लगी। घायल अवस्था से राणा सांगा को युद्ध के मैदान से बाहर ले जाया गया, इस प्रकार राजपूतों की पराजय हुई और बाबर ने युद्ध में विजय प्राप्त की।

1. बाबर ने बड़ी कुशलता से अपनी सेना का संचालन व व्यूह रचना की, जिससे राजपूतों की पराजय हुई।
2. राजपूत सैनिक बाबर की तोपों के आगे असहाय हो गए।
3. बाबर की तुलुगमा रणनीति भी राजपूतों की पराजय का कारण बनी
4. रजपूत सेना मे अनुशासन का अभाव था, सैनिकों की स्वामी भक्ति अपने–अपने राजाओं के प्रति थी न कि राजा सांगा के प्रति। इसके विपरीत बाबर के सैनिक वफादार व अनुशासनबद्ध थे।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 2 अंक एवं 4 कारणों पर विस्तार से लिखेन पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 11. मराठों के उत्कर्ष के निम्न कारण है :–

1. **प्राकृतिक कारण** :– महाराष्ट्र की भूमि बंजर, पहाड़ी और कम उपजाऊ है, वहां वर्षा की कमी रहती है, इस कारण जीवकाउपार्जन के लिए मराठों को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता था। इस कारण मराठे परिश्रमी, कठोर तथा बहादुर बन गये, वहां का पहाड़ी क्षेत्र किलों का काम करता था इस क्षेत्र में वे शत्रुओं को सहजता से पराजित कर देते थे तथा लूटपात कर पहाड़ियों में छिप जाते थे।

2. **धार्मिक जागृति** :– महाराष्ट्र में अनेक धर्म सुधारक संत हुए जिन्होंने जाति भेदभाव को दूर किया तथा मराठों को एकता के सूत्र में बांधा।
3. **सैनिक कारण** :– दक्षिण के मुस्लिम साम्राज्य में बड़ी संख्या में मराठा सैनिक कार्य करते थे, इसलिए उन्हें प्रशासकीय कार्य और सैनिक शिक्षा का पर्याप्त ज्ञान था। इस अनुभव ने उन्हें मुगल साम्राज्य से लोहा लेने की शक्ति प्रदान की।
4. **भाषा और साहित्य** :– मराठों में मातृभाषा के प्रति प्रेम था इस कारण एक भाषा और एक धर्म ने उन्हें संगठित किया। एकता के साथ–साथ भाईचारे की भावना उत्पन्न हुई।
5. **दक्षिण में मुगलों की कमजोरी** :– दक्षिण मे मुगलों की स्थिति कमजोर थी इस दुर्बलता का मराठों ने भरपूर फायदा उठाया। मुगलों ने कभी भी दक्षिण में निर्णायक युद्ध नहीं किया इस कारण मराठों को संगठित होने का अच्छा अवसर मिला।
6. **औरंगजेब की दक्षिण नीति** :–औरंगजेब की कठोर धार्मिक नीति और हिन्दूओं के प्रति उसकी विरोधी नीति ने मराठों को एकसूत्र में बांधने का कार्य किया तथा मराठों में राष्ट्रवाद और स्वराज्य की भावना को प्रबल रूप से प्रेरित किया। औरंगजेब महाराष्ट्र में हिन्दूओं के मंदिर तोड़ेगा तथा बलपूर्वक हिन्दूओं को मुसलमान बनाएगा इस भावना ने भी मराठों को मातृभूमि के लिए मर मिटने के लिए प्रेरणा दी।
7. **राजनीतिक चेतना** :– दक्षिण में शिया रियासते आपस में लड़कर शक्तिहीन हो गई थी, इस अवसर का लाभ उठाते हुए शिवाजी ने इस राजनीतिक रिक्तता को भरने के लिए मराठा शक्ति को एकजूट किया।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार कोई 4 कारणों पर विस्तार सहित लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

शिवाजी अपनी माता जीजा बाई के साथ पूना में रहते थे और पूना की जागीर की देखभाल करते थे। शिवाजी की शिक्षा–दीक्षा माता जीजाबाई के संरक्षण में हुई थी, जीजाबाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी इस बात का शिवाजी पर गहरा प्रभाव पड़ा, शिवाजी के संरक्षक और गुरू दादा कोंणदेव का भी शिवाजी के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने दादा कोंणदेव से राजनीति और युद्ध की शिक्षा प्राप्त की, घुड़सवारी, शस्त्रविद्या में श्रेष्ठता शिवाजी ने बचपन में ही प्राप्त कर ली थी। बचपन में ही शिवाजी के मन में उच्च कोटि की हिन्दुत्व की भावना उत्पन्न हो गई थी। गुरू रामदास और तुकाराम का भी शिवाजी पर बहुत प्रभाव था, रामदास ने शिवाजी को देश प्रेम और देशोद्धार के लिए प्रेरित किया वे स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना चाहते थे।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 12. इलाहबाद की संधि की शर्तें निम्नलिखित थी :–

1. अवध के नवाब ने कंपनी को पचास लाख रूपये युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में देना स्वीकार किया।
2. कड़ा तथा इलाहबाद को छोड़कर शेष भाग वहां के नवाब शुजाउद्दौला को लौटा दिया गया।
3. कंपनी नवाब को जो सैनिक सहायता देनी थी उसका संपूर्ण व्यय नवाब को उठाना पड़ेगा।
4. मुगल सम्राट को अंग्रेजों ने 26 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया।
5. मुगल सम्राट ने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की माल गुजारी वसूल करने का आदेश दिया।

6. कड़ा तथा इलाहबाद के जिले नवाब से लेकर मुगल सम्राट को दे दिये गये।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 4 शर्तों का विस्तार से वर्णन किये जाने पर 4 अंक प्राप्त होंगे– 1+1+1+1=4)

अथवा

प्लासी के युद्ध के निम्न परिणाम निकले :–

1. प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल पर अंग्रेजों का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।
2. प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी के गौरव में वृद्धि हुई।
3. प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों को भारत विजय के लिए और अधिक प्रोत्साहित किया।
4. फ्रांसीसियों की शक्ति को गहरा आघात लगा।
5. प्लासी के युद्ध के पश्चात कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में स्वतंत्र व्यापार करने की छूट मिल गई।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य 4 परिणाम लिखने पर प्रत्येक पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे– 1+1+1+1)

उत्तर 13. नव–पाषाण काल में मानव ने तीव्रता से प्रगति की जिससे उनके मानव जीवन में कृषि एवं पशुपालन का कार्य करने से परिवर्तन हुए वे निम्न है :–

1. **कृषिः–** इस काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इस काल का मानव कृषि करने लगा था। इससे पूर्व के मानव को कृषि का ज्ञान नहीं था। अतः उस प्राचीन युग में यह कार्य एक महान क्रांति कहा जा सकता

है। मानव के घुमक्कड़ी जीवन को समाप्त कर दिया इस काल की मुख्य उपज– गेहूं, जौ, मक्का, बाजरा, कपास आदि है।

2. **पशुपालनः–** इस काल में मानव ने पशुपालन करना सीख लिया था। मानव का पहला पालतु पशु कुत्ता था। धीरे–धीरे मानव ने बकरी, घोड़ा, भेड़, भैंस, गाय व बैल आदि को भी पालना शुरू कर दिय। पशुपालन से मानव को बहुत से लाभ हुए। उसे नियमित रूप से दूध और मांस मिलने लगा तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में सुविधा हो गई।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार नवपाषणकाल पर संक्षेप में लिखने पर 1 अंक कृषि पर 2 अंक पशुपालन पर 2 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+2+2=5)

अथवा

अभिलेख प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के महत्वपूर्ण और प्रमाणिक स्त्रोत माने जाते है, क्योंकि अभिलेख समकालीन होते है। जिस राजा अथवा राज्य के विषय में अभिलेख पर लिखा होता है, अभिलेख की रचना भी उसी राजा के शासनकाल में की गई होती है।

अभिलेखों से तात्कालीन राजीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त अभिलेख राज्य की सीमाओं और राजा के व्यक्तित्व के विषय में भी सटीक जानकारी प्रदान करते है।

डॉ. रमेश चन्द्र मजमूदार ने लिखा है ''अभिलेख समसामयिक होने के कारण विश्वसनीय प्रमाण है और उनसे हमें सबसे अधिक सहायता मिलती है।'' अभिलेख विभिन्न रूपों में प्राप्त हुए है, शिला पर लिखे गए अभिलेख को शिला–लेख, स्तम्भ पर लिखे गये अभिलेख को स्तम्भ–लेख, ताम्र पत्र पर लिखे गये अभिलेख को ताम्र पत्र–लेख, मूर्ति पर लिखे गए अभिलेख को मूर्ति–लेख कहा जाता है।

प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेख अधिकांशतः पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषाओं में लिखे गए है। लेकिन कुछ अभिलेख तमिल, मलयालम, कन्नड़ व तेलगु भाषाओं में भी लिखे गये है। अधिकांश अभिलेखों की लिपि ''ब्राह्मी'' है, जबकि कुछ अभिलेख ''खरोष्ठी'' लिपि में भी लिखे हुए है। सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के है।

(उपरोक्तानुसार लिपि के नाम लिखने पर 1 अंक एवं अभिलेखों के महत्व पर विस्तार देने पर 1+2+2=5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 14. भक्ति आन्दोलन के निम्नलिखित कारण है :–

1. **हिन्दु धर्म का जटिल होना :–** हिन्दु धर्म में यज्ञ, कर्मकाण्ड, पूजा पाठ, उपवास आदि धार्मिक क्रियाओं की जटिलता को साधारण जनता सरलता से निभा नहीं पाती थी, जबकि भक्ति मार्ग सरल था इसलिए यह लोक प्रिय होता गया।
2. **दीर्घकालीन पराधीनता :–** सल्तनकाल में हिन्दू अपनी पराधीनता से परेशान हो गए थे इसलिए मानसिक तनाव से मुक्ति हेतु हिन्दू ईश्वर भक्ति में लीन हो गए इससे भक्ति आंदोलन को बल मिला।
3. **क्रियात्मक शक्ति के नियोजन की आवश्यकता :–** दीर्घकाल तक पराधीन रहने के कारण हिन्दूओं का कर्मशील जीवन नष्ट हो गया था व वे निष्क्रिय हो गए थे ऐसे में ईश्वर की भक्ति में लीन होकर वे क्रियाशील का अनुभव करने लगे।
4. **जाति–व्यवस्था का जटिल होना :–** भारतीय समाज में उच्च जातियां स्वयं को श्रेष्ठ समझकर निम्न जातियों पर अत्याचार करती थी। इससे निम्न जातियों में असंतोष था भक्ति आंदोलन में ऊंच–नीच जांति–पाति नहीं होती थी। भक्ति आंदोलन ने अछूते तथा निम्न वर्ग के व्यक्तियों के लिए भी मार्ग खोल दिया था।

5. **मंदिरों और मूर्तियों का विनाश :–** धर्मान्ध मुस्लिम ने भारतीय मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा, ऐसी स्थिति में हिन्दुओं ने ईश्वर उपासना का कोई साधन न देखकर भक्ति मार्ग को ग्रहण करना उचित समझा।
6. **समन्वय की भावना :–** दीर्घकाल तक हिन्दू और मुसलमान एक साथ रहने के कारण हिन्दू तथा मुसलमानों ने अनुभव किया कि दोनों धर्मावलम्बियों में जो ईर्ष्या उत्पन्न हो गई है उसका अन्त कर सद्भावना उत्पन्न की जाए।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कारणों के नाम लिखने पर 1 अंक एवं 4 कारणों को विस्तार से लिखने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+4=5)

अथवा

मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलता के कारण :– मोहम्मद तुगलक एक योग्य व दूरदर्शी शासक था लेकिन वह अपनी दूरदर्शिता पूर्ण योजनाओं को कार्यान्वित करने में असफल रहा। उसकी असफलता के निम्न कारण थे :–

1. **योजनाओं का गलत क्रियान्वयन** :– मोहम्मद तुगलक ने दोआब में कर वृद्धि, राजधानी परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा का चलन आदि योजनाओं को गलत तरीके से क्रियान्वित किया इसलिए उसकी योजना असफल रही।
2. **आकस्मिक परिस्थितियां :–** मोहम्मद तुगलक की योजनाओं के समय अचानक ऐसी परिस्थितियां आ गई जिससे उनका असफल होना स्वाभाविक था। जैसे– दोआब में कर वृद्धि के समय अकाल पड़ जाना जिससे यह योजना सफल नहीं हो सकी।
3. **कट्टरपंथियों का असहयोग** :– मोहम्मद तुगलक कट्टर मुस्लिम नहीं था उसने उलेमा वर्ग को राजनीति से अलग रखा जिससे उलेमा व कट्टर मुसलमान उससे नाराज हो गए व उसकी नीतियों से असंतुष्ट हो गए।

4. **योजनाएं समय से आगे थी** :– यद्यपि मोहम्मद तुगलक की योजनाएं दूरदर्शी थी लेकिन समय से आगे थी। प्रजा उसे समझ नहीं पाई और कार्यान्वित नहीं कर पाई इसलिए योजनाएं सफल हो गई।
5. **सुल्तान की दानशीलता** :– सुल्तान की दानशीलता भी उसकी असफलता का कारण बनी। पिता की हत्या के निन्दनीय अपराध को ढ़कने के लिए उसने जनता में खूब धन बांटा। उसके लंगर में प्रतिदिन 4000 लोग भोजन करते थे, परिणामस्वरूप उसका राजकोष खाली हो गया।
6. **योग्य परामर्शदाताओं का अभावः**– अलाउद्दीन की तरह मोहम्मद तुगलक को योग्य परामर्शदाता नहीं मिला जो उसकी योजनाओं को प्रतिकूल समय में रोकते इस कारण उसे उचित परामर्श नहीं मिला।
7. **सुल्तान का चरित्र** :– सुल्तान एक जल्दबाजी व उतावलेपन का व्यक्ति था इस कारण उसे असफलता मिली व वह जनता में अपने प्रति विश्वास उत्पन्न वही कर सका।

(उपरोक्तानुसार तुगलक के विषय में संक्षिप्त में लिखने पर ½ अंक 7 कारण लिखने पर ½ अंक एवं 4 कारणों पर विस्तार से लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 15. **औरंगजेब की दक्षिण नीति के परिणाम** :– औरंगजेब ने अपनी दक्षिण नीति के परिणामस्वरूप बीजापुर व गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया लेकिन उसकी दक्षिण नीति के सभी परिणाम साम्राज्य के लिए घातका सिद्ध हुए। उसकी दक्षिण नीति के परिणाम निम्नलिखित है :–

1. **उत्तरी भारत में अव्यवस्था** :– औरंगजेब ने अपने 50 वर्ष के शासन काल में 25 वर्ष दक्षिण की समस्या सुलझाने में बिता दिए। इस दौरान उत्तर भारत की ओर उसका ध्यान नहीं रहा और उत्तर भारत में असफलता फैल गई वहां विद्रोह होने लगे जिससे मुगल सत्ता का नियंत्रण कमजोर हो गया।
2. **मराठों का उत्कर्ष** :– औरंगजेब ने बीजापुर व गोलकुण्डा पर आक्रमण करके भूल की क्योंकि मुस्लिम राज्यों के नष्ट होने से मराठों को अपनी शक्ति

बढ़ाने का अवसर मिल गया और औरंगजेब उनका दमन पूर्ण रूप से नहीं कर पाया।

3. **मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को आघात** :– मराठों के विरूद्ध सफलता हासिल न कर पाने के कारण मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुंचा।
4. **मुगलों की सैनिक शक्ति का ह्रास** :– औरंगजेब ने दक्षिण युद्धों के कारण मुगलों की सैन्य शक्ति को बहुत ह्रास हुआ। असंख्य सैनिक मारे गए अनेक बीमार हो गए इससे सेना में निराशा फैल गई।
5. **आर्थिक लाभ** :– दक्षिण के युद्धों के परिणामस्वरूप औरंगजेब की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई और मुगल राजकोष रिक्त हो गया। दक्षिण के निरंत युद्धों से कृषि व व्यापार को भी नुकसान हुआ।
6. **मुगल सैनिकों में असंतोष** :– दक्षिण के लम्बे युद्धों से मुगल सैनिक ऊब गए उन्हें समय पर वेतन नहीं मिलता था वे अपने परिवार से दूर हो गए थे इस कारण उनका उत्साह कम हो गया था और सैनिकों के इस असंतोष के कारण सेना की रणकुशलता कम हो गई थी।

जइवाथ सरकार के अनुसार – जिस प्रकार स्पेन के नासूर ने नेपोलियन का विनाश कर दिया, उसी प्रकार दक्षिण के नासूर ने औरंगजेब का विनाश कर दिया।

इस प्रकार औरंगजेब की दक्षिण नीति ने औरंगजेब व मुगल साम्राज्य दोनों को ही गहरा आघात दिया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार दक्षिण नीति पर संक्षिप्त में लिखने पर 1 अंक एवं 4 परिणामों पर विस्तार देने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1+1=5)

अथवा

रानी दुर्गावती का मुगलों के विरूद्ध प्रतिरोध :–

रानी दुर्गावती अपने पुत्र वीरनारायण की संरक्षिका के रूप में गोंडवाना की शासिका थी। गोंडवाना मध्यप्रदेश में स्थित राज्य था। रानी दुर्गावती अत्यंत बहादुर, साहसी और योग्य शासिका थी। अपनी योग्यता के कारण ही वह मालवा और दक्षिण भारत के मुसलमान शासकों के मुकाबले अपने राज्य की स्वतंत्रता की रक्षा करने में सफल हो सकी थी।

मुगल सम्राट अकबर ने अपनी साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करते हुए अकारण ही गोंडवाना पर आक्रमण करने की योजना बनाई और 1564 में आसफ खान के नेतृत्व में सेना भेजी। रानी दुर्गावती ने चौरागढ़ के निकट वीरता से युद्ध किया इससे वीरनारायण घायल हो गया तब भी रानी दुर्गावती वीरता व अदम्य साहस से लड़ती रही लेकिन दुर्भाग्य से घायल हो गई और उन्हें युद्ध क्षेत्र से हटना पड़ा। जब उन्होंने देखा कि उन्हें बन्दी बना लिया जाएगा तो उन्होंने स्वयं को कटार मार ली और वीरगति को प्राप्त हो गई। मुगलों की सेना ने गोंडवाना की राजधानी चौरागढ़ पर अधिकार कर लिया।

रानी दुर्गावती के अदम्य, साहस, योग्यता और बहादुरी की सभी तत्कालीन और वर्तमान इतिहासकारों ने प्रशंसा की है और अकबर के आक्रमण की आलोचना की है। वी.ए. स्मिथ के अनुसार ''ऐसी उच्च चरित्र वाली शासिका के विरूद्ध अकबर का आक्रमण केवल अतिक्रमण था। अकबर के विरूद्ध उसने ऐसा कोई कार्य नहीं किया था जिससे वह क्रोधित होता। अकबर के इस आक्रमण का कोई औचित्य नहीं था।''

(उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 1+2+2=5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 16. **शिवाजी की अष्टप्रधान व्यवस्था** :– शिवाजी को परामर्श देने के लिए एक मंत्री परिषद होती थी जिसमें कुल आठ मंत्री थे यह अष्ट प्रधान कहलाते थे। इनकी नियुक्ति शिवाजी स्वयं करते थे, प्रत्येक मंत्री को एक विभाग सौंपा जाता था जो अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी होते थे। मंत्रियों से परामर्श लेने के लिए शिवाजी बाध्य नहीं थे उनके अष्ट प्रधान के नाम व कार्य निम्नांकित थे :–

1. **पेशवा या प्रधानमंत्री** :– इसका प्रमुख कार्य राज्य का निरीक्षण करना राजा की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधित्व करना व प्रशासन का संचालन करना था। केन्द्रीय शासन में राजा के बाद उसका ही स्थान था।
2. **आमात्य** :– आमात्य अर्थ विभाग का प्रधान होता था, जिसे मजूमदार के नाम से भी जाना जाता था। इसका कार्य आय–व्यय का हिसाब रखना व प्रान्त के हिसाब किताब की जांच करना था।
3. **मन्त्री** :– मंत्री राजा के दैनिक कार्य, दरबार की कार्यवाही का विवरण रखना व राजा के गृह प्रबंध का कार्य करता था।
4. **सचिव** :– यह राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य करता था व परगनों की आमदनी का ब्यौरा रखता था।
5. **सुमन्त** :– यह वैदेशिक मामलों को देखता था।
6. **सेनापति** :– सैन्य संचालन व सेना की व्यवस्था करता था।
7. **पण्डित राव** :– यह धर्म व दान विभाग का प्रमुख था और राज्य के प्रमुख राजपुरोहित के दायित्वों का निर्वहन करता था।
8. **न्यायाधीश** :– यह मंत्री न्याय विभाग का कार्य करता था।

शिवाजी की अष्ट प्रधान परिषद में सेनापति को छोड़कर सातों मंत्री ब्राम्हण होते थे और उन्हें राजकोष से वेतन दिया जाता था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार शिवाजी की अष्ट प्रधान व्यवस्था पर संक्षिप्त पर लिखने पर 2 अंक, 8 बिन्दु के नाम लिखने पर 2 अंक एवं 6 बिन्दुओं का विस्तार से लिखने पर 3 अंक पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे–2+3=5)

अथवा

शिवाजी एक कुशल सैनिक विजेता तथा मराठा साम्राज्य के निर्माता होने के साथ–साथ एक कुशल प्रशासक भी थे। शिवाजी राज्य के सर्वोत्तम अधिकारी थे

तथा राज्य की समस्त शक्तियां उन्हीं के हाथों में केन्द्रित थी। शिवाजी के चरित्र की निम्न विशेषताएं थी :–

1. **आर्दश तथा उच्च व्यक्तित्व :–** शिवाजी का व्यवहार बहुमुखी तथा उच्च कोटि का देश भक्त एवं राष्ट्र निर्माता के रूप में याद किया जाता है। वास्तव में शिवाजी का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि उनसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो जाता था।
2. **उज्जवल चरित्र** :– शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था वे शत्रु की स्त्री को भी माँ तथा बहन के समान समझते थे। वे प्रजा की बहुबेटियों को ही नहीं वरन शत्रु की बहुबेटियों को भी अपनी बेटियां मानते थे।
3. **महान संगठनकर्ता :–** शिवाजी एक महान संगठन कर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।
4. **महान सेना नायक** :– शिवाजी एक महान सेना नायक थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन बड़ी कुशलता के साथ करते थे।
5. **महान विजेता** :– शिवाजी महान विजेता थे। 1956 ई. में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार में किया था।
6. **कुशल प्रशासक :–** एक साहसी तथा सफल सैनिक विजेता ही नहीं वरन अपनी प्रजा के बुद्धिमान शासक थे। शिवाजी जनता की सेवा को ही अपना धर्म सकते थे। शिवाजी ने जमींदारी, जागीरदारीं, ठेकेदारी प्रथाओं को समाप्त किया।

(शिवाजी के विषय में लिखने पर 1 अंक। उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 4 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+4=5)

उत्तर 17. **रेग्यूलेटिंग एक्ट की प्रमुख धाराएं :–**

ब्रिटिश सरकार द्वारा 1773 में रेग्यूलेटिंग एक्ट पारित किया गया जिसकी निम्नलिखित धाराएं है :–

1. बंगाल के गवर्नर को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया और मद्रास और मुम्बई के गवर्नर उसके अधीन कर दिए गए।
2. गवर्नर जनरल की सहायता के लिए चार सदस्यों की एक परिषद नियुक्त की गई जिसमें निर्णय बहुमत से होता था। गवर्नर जनरल केवल उसी समय निर्णायक मत दे सकता था जब परिषद के सदस्यों के मत बराबर संख्या में विभाजित हो जाएं।
3. कोलकाता में एक उच्चतम न्यायालय की स्थापना की गई इसमें एक मुख्य न्यायाधीश और तीन अन्य न्यायाधीशों को नियुक्त करने की व्यवस्था की गई।
4. कम्पनी के प्रोपराइटरों को मत देने की योग्यता में वृद्धि कर दी गई। अब वही व्यक्ति मताधिकार में भाग ले सकते थे जिसके पास कम से कम एक हजार पौण्ड के शेयर्स थे।
5. डायरेक्टरों का निर्वाचन एक वर्ष के स्थान पर चार वर्षों के लिए किया गया। इनमें से एक चौथाई सदस्य प्रत्येक वर्ष त्याग पत्र देंगे और एक वर्ष तक सदस्य नहीं चुने जाएंगे।
6. कम्पनी के डायरेक्टरों को कंपनी की धन संबंधी रिपोर्ट इंग्लैण्ड के अर्थमंत्री को तथा सैनिक व राजनैतिक कार्यों की रिपोर्ट इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री को देनी होगी।

इस प्रकार रेग्युलेटिंग एक्ट इंग्लैण्ड की सरकार का कंपनी के मामलों को नियमित करने तथा भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार करने का पहला प्रयास था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एक्ट की सही तारीख लिखने पर 1 अंक एवं प्रशासनिक सुधार पर 1 अंक एवं 6 बिन्दुओं को विस्तार देने पर 3 अंक प्राप्त होंगे–1+3+1=5)

अथवा

हिन्दू धर्म और समाज में सुधार हेतु आर्य समाज का योगदान :–

1. **धार्मिक सुधार कार्य :–** आर्य समाज ने मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड, बलि प्रथा और स्वर्ग नरक की कल्पना और भाग्य में विश्वास का विरोध किया। उन्होंने वेदों की श्रेष्ठता का दावा किया उसी आधार पर मंत्र पाठ, हवन, यज्ञ पर बल दिया। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म को सरल बनाया।
2. **सामाजिक सुधार कार्य :–** उन्होंने बाल विवाह, बहुविवाह, पर्दाप्रथा, सती प्रथा, जाति प्रथा, छुआछूत, अशिक्षा आदि सामाजिक बुराई का विरोध किया और स्त्री जाति, अन्तर्जातीय विवाह एवं विधवा विवाह का समर्थन किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वर्ण व्यवस्था और जांति पाति के ऊंच–नीच व भेदभाव को नहीं माना व समाजिक एकता पर बल दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती स्त्री शिक्षा के समर्थक थे उन्होंने स्त्री शिक्षा से परिवार व समाज की उन्नति होती है बताया। वे प्राचीन गुरूकुल प्रणाली के समर्थक थे उन्होंने बालक व बालिकाओं के लिए गुरूकुलों की स्थापना की। आर्य समाज स्वामी श्रृद्वानन्द ने हरिद्वार में गुरूकुल की स्थापना की जो आजकल गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। आर्य समाज द्वारा बड़ी संख्या में दयानन्द एंग्ली वैदिक कालेज खोले गए इससे देश में शिक्षा प्रसार को बल मिला। आर्य समाज ने भारतवासियों में स्वाभिमान व देश प्रेम की भावना का संचार किया।

(उपरोक्तानुसार धार्मिक सुधार पर 2 अंक समाज सुधार पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 18. 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम के लिए उत्तरदायी प्रमुख राजनीतिक कारण निम्नांकित है :–

1. **गोद निषेध प्रथा :–** 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख कारण लॉर्ड डलहौजी की साम्राज्यावादी नीतियां थी। अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत लॉर्ड डलहौजी ने देशी रियासतों के लिए गोद निषेध प्रथा लागू की। जिन

राजाओं के पुत्र नहीं होते थे वे अन्य किसी के पुत्र को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी घोषित कर देते थे। इस परम्परा के विपरीत लॉर्ड डलहौजी ने घोषणा की कि जो देशी राज्य कंपनी के साथ संधि द्वारा बंधे हुए है या अधीन है उन राजाओं के पुत्र नहीं है वे अंग्रेजी शासन की अनुमति के बिना किसी को गोद नहीं ले सकते।

2. **कुशासन के आधार पर राज्य अपहरण** :– लार्ड डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार के उद्देश्य से एक अन्य नीति और प्रतिपादित की जिसके तहत कुशासन का आरोप लगाकर देशी राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य का अंग बना लिया जाता था।
3. **पेंशन और पदों की समाप्ति** :– अंग्रेजों ने जिन देशी राज्यों को अपने अधीन कर लिया था उनके राजाओं को पेंशन और पद प्रदान किये जाते थे। लार्ड डलहौजी ने अपने शासन काल में यह घोषणा की कि पेंशन और पद व्यक्तिगत होते है। अतः इनके उपभोक्ताओं की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारियों को नहीं मिलने चाहिए। लार्ड डलहौजी ने अपनी इस नीति के अन्तर्गत ही पेशवा बाजीराव की मृत्यु के पश्चात उनके दत्तक पुत्र नाना साहब को पेंशन देने से इंकार कर दिया था।
4. **बहादुरशाह के साथ अंग्रेजों का अपमान जनक व्यवहार** :– मुगल सम्राट बहादुरशाह की शक्ति बहुत क्षीण हो गई थी फिर भी उनका स्वतंत्र अस्तित्व शेष था। भारतीय प्रजा मुगल सम्राट का सम्मान करती थी, सिक्कों पर भी मुगल सम्राट का नाम अंकित किया जाता था। कंपनी के उच्चाधिकारी भी उनको झुककर सलाम करते थे। लेकिन 1835 ई. से अंग्रेजों ने मुद्राओं पर मुगल सम्राट का नाम अंकित करना बंद कर दिया और उनका सम्मान करना भी बंद कर दिया।
5. **भारतीय उच्च वर्ग के साथ अन्याय** :– भारतीय उच्च वर्ग को देशी राजाओं के शासन काल में अनेक विशेष अधिकार तथा सुविधाएं प्राप्त थी, लेकिन अंग्रेजों के शासन की स्थापना से वे समस्त विशेषाधिकारों और सुविधाओं से

वंचित हो गये। ऐसी स्थिति में उनमें असंतोष उत्पन्न होना स्वाभाविक था। उनके स्थान पर जो अंग्रेज पदाधिकारी नियुक्त किये गये वे जनता के प्रति उदासीन व भ्रष्ट थे।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 कारणों का विस्तार लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1+1=5)

अथवा

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों का भारतीय उद्योगों पर प्रभाव :–

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों ने भारत के उद्योगों पर गहन प्रभाव डाला। भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की भूमिका प्रमुख रूप से व्यापारिक कंपनी जैसी रही।

वह भारत में कपड़ा, नील और मसाले का निर्यात करती थी। इस काल मे इंग्लैण्ड में उद्योग धन्धों का इतना विकास नहीं हुआ था कि भारत को इन वस्तुओं के बदले अपना माल बेच सके।

1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया और कंपनी ने बंगाल के संसाधनों का अपने व्यापारिक हितों के लिए प्रयोग किया। इलाहबाद की संधि के द्वारा कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई थी, जिससे सारे प्रदेश पर कंपनी का प्रभुत्व स्थापित हो गया। तदुपरांत कंपनी के कर्मचारी ने खुली लूट प्रारंभ कर दी कंपनी के कर्मचारी न केवल निजी व्यापार द्वारा बल्कि भेटों और उपहारों द्वारा अपनी जेबें भरने लगे।

अब भारतीय माल की खरीद भारतीय पैसे से की जाने लगी। ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों की इस लूट–खसूट से भारत का आर्थिक संतुलन डगमगाने लगा। कंपनी की इस व्यापारिक लूट से भारतीय व्यापारी तबाह हो

गये। कंपनी के कर्मचारी पूरे प्रदेश में निशुल्क व्यापार करते थे। जबकि भारतीय व्यापारियों को भारी शुल्क अदा करना पड़ता था।

कंपनी के कर्मचारी और उसके भारतीय ठेकेदार कारीगरों को भारी शुल्क अदा करना पड़ता था। कंपनी के कर्मचारी और उसके ठेकेदार कारीगरों पर अत्याचार करने लगे।

कंपनी के ठेकेदारों ने इन बुनकरों को अपना माल सस्ती दरों पर बेचने के लिए मजबूर कर दिया इसके अतिरिक्त कंपनी में कपास की खरीद और बिक्री पर अपना एकाधिकार स्थापित किया और बुनकरों को कंपनी द्वारा निर्धारित मूल्य पर ही कपास खरीदने को मजबूर किया।

जिस समय अंग्रेज बंगाल में अपना शिकंजा कस रहे थे उस समय इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हो रही थी और अनेक कारखाने स्थापित हो रहे थे।

अंग्रेज बंगाल से प्राप्त संपत्ति इंग्लैण्ड में नव स्थापित कारखानों में खर्च कर रहे थे। जब भारतीय संपत्ति की सहायता से इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति पूर्ण हो गई तब इंग्लैण्ड के कारखानों में बने माल की बिक्री के लिए नए बाजार ढूंढ़ने का कार्य प्रारंभ हुआ।

भारतीय उद्योग धन्धे नष्ट हो गये कंपनी ने भारत से कच्चे माल और खाद्यान्न प्राप्त किया जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं था। इससे भारत में खाद्यान्नों की कमी होने लगी और उद्योग धन्धे नष्ट हो गए।

(उपरोक्तानुसार विस्तार से वर्णन किये जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 19. **भारत छोड़ो आन्दोलन में म.प्र. का योगदान :–**

1942 ई. को अखिल भारतीय कांग्रेस ने अंग्रेजों के विरूद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया। इस भारत छोड़ों प्रस्ताव ने देश के वातावरण को एकदम गर्म कर दिया। 9 अगस्त 1942 ई. को महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल आजाद, सरदार पटेल, वल्लभ भाई पटेल

तथा आचार्य कृपलानी सहित कांग्रेस कार्य समिति के अनेक सदस्यों को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थानों पर ले जाया गया।

मध्यप्रदेश में 9 अगस्त 1942 ई. को जैसे ही महात्मा गांधी व अन्य नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार जनमानस को प्राप्त हुआ तो समस्त प्रदेश में स्थान–स्थान पर लोगों में आक्रोश फूट पढ़ा।

जबलपुर में 9 अगस्त को ही स्थापित नेताओं ने बैठक करके एक सप्ताह तक पूर्ण हड़ताल का निर्णय लिया। अंग्रेज अधिकारियों ने स्थिति से निपटने के लिए नगर में धारा–144 लगाकर जनसभाओं को प्रतिबंधित कर दिया। शासन की इस कार्यवाही से जनमानस में और अधिक उत्तेजना फैल गई। आन्दोलनकारियों ने प्रतिक्रिया स्वरूप जगह–जगह टेलीफोन के तार काटे, रेल की पटरियां उखाड़ी और शासकीय इमारतों को क्षतिग्रस्त कर दिया।

आन्दोलनकारियों ने स्थान–स्थान पर धारा 144 को तोड़ा। विशाल जुलूस निकाले और सार्वजनिक सभाएं आयोजित की। पुलिस द्वारा दर्दनाक दमनात्मक कार्यवाहियां की गई अनेक लोग गिरफ्तार किये गये, अनेक घायल हुए व शहीद भी हुए।

ग्वालियर रियासत में भी भारत छोड़ो आन्दोलन ने शीघ्र ही उग्र रूप धारण कर लिया। ग्वालियर रियासत में उज्जैन, शाजापुर, मन्दसौर, नीमच, भिण्ड, मुरैना आदि के गांव–गांव ने इस आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया।

9 अगस्त 1942 ई. को जब महात्मा गांधी तथा अन्य प्रमुख नेताओं को गिरफ्तारी का समाचार इन्दौर पहुंचा, तब वहां स्थिति अत्यंत तनावपूर्ण हो गई। राष्ट्रवादी कार्यकर्ता सड़कों पर निकल आये पूर्ण हड़ताल की घोषणा की गई और जुलूस निकाले गये जिनमें ''करो या मरो'' तथा ''भारत छोड़ो'' के नारे लगाये गये।

इन्दौर के वस्त्र उद्योग के श्रमिक तथा छात्र भी इस आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। इस विवेचना से स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में म.प्र. के देशभक्तों और क्रांतीवीरों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार मध्यप्रदेश के आन्दोलन के सन् एवं तारीख सही लिखने पर 2 अंक एवं विस्तार देने पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मध्यप्रदेश में गुप्त कालीन अभिलेख :–

मध्यप्रदेश के सागर जिले में स्थित एरण नामक स्थान से चन्द्रगुप्त का एक लेख प्राप्त हुआ है। जो खंडित अवस्था में है। इसमें समुद्रगुप्त को पृथु, राघव आदि राजाओं से बढ़कर दानी कहा गया है। जो प्रसन्न होने पर कुबेर तथा रूष्ट होने पर यमराज के समान था।

मध्यप्रदेश में गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के तीन अभिलेख पूर्वी मालवा क्षेत्र से प्राप्त हुए है जिनमें परोक्ष रूप से शत्रु विजय की सूचना मिलती है। इनमें प्रथम अभिलेख भेलसा के समीप उदयगिरी पहाड़ी से मिलता है जो इसके संधि विग्रहिक सचिव वीरसेन का है। इस अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि वह संपूर्ण पृथ्वी को जीतने की इच्छा से राजा के साथ इस स्थान पर आया था। गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कुमार गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासन काल से संबंधित मध्यप्रदेश में प्राप्त अभिलेखों की स्थिति भिन्न है :–

1. **मन्दसौर अभिलेख** :– मन्दसौर प्राचीन पश्चिमी मालवा का हिस्सा था। इस अभिलेख में विक्रम संवत 529 (473 ई.) की तिथि अंकित है। जिसकी रचना संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान वत्यभट्टि थे।
2. **सांची अभिलेख** :– इस अभिलेख में यहां आर्य संघ को धन दान में दिये जाने का उल्लेख है।
3. **उदयगिरी गुहालेख** :– इस अभिलेख में शंकर नामक व्यक्ति द्वारा इस स्थान पर पाशर्वनाथ की मूर्ति स्थापित किये जाने का विश्रण है।
4. **तुमैन अभिलेख** :– यह अभिलेख गुना जिले से प्राप्त हुआ है। कुमार गुप्त के पश्चात उसका पुत्र स्कन्दगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। उसके शासन

काल का एक अभिलेख मध्यप्रदेश के रीवा जिले में स्थित सुपिया नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख 'सुपिया के लेख' नाम से जाना जाता है। इस लेख में गुप्तों की वंशावली मिलती है।

(उपरोक्तानुसार गुप्त कालीन अभिलेख के विषय पर लिखने पर 2 अंक अन्य कोई 3 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर 3 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–2+3=5)

उत्तर 20. बक्सर का युद्ध 1764 मे बक्सर नाम स्थान पर अंग्रेजी सेना और मीर कासिम, शुजाउद्दौला तथा शाह आलम की संयुक्त सेना के बीच हुआ था। इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **मीर कासिम की नाराजगी :–** मीर कासिम ने शासन में सुधार किए, अंग्रेजों को यह ठीक नहीं लगा और उन्होंने मीर कासिम को पद से हटाने का षड़यंत्र प्रारंभ कर दिया जो बाद में युद्ध का कारण बना।
2. **अंग्रेजों का दुर्व्यवहार :–** कंपनी के कर्मचारियों एवं अंग्रेजों का भारतीयों के साथ व्यवहार अच्छा नहीं था, यहां तक की कंपनी के कर्मचारियों ने नवाब के आदेशों की अवहेलना करना प्रारंभ कर दिया, अंग्रेजो के इस व्यवहार से नवाब और जनता दोनों में नाराजगी थी।
3. **व्यापारिक सुविधा का दुरूपयोग** :– अंग्रेजों ने अपने व्यापारिक माल पर चुंगी देना बंद कर दिया था। इस कारण भारतीय व्यापारी अत्यधिक हानि उठाते थे, अंग्रेजों ने भारतीय व्यापारियों से रिश्वत लेकर उनके माल को अंग्रेजों का माल बता कर बिना चुंगी दिए भारतीय व्यापारी व्यापार करने लगे इस कारण राज्य के राजस्व को हानि होने लगी। अंग्रेजों के इस कार्य से नवाब अत्याधिक नाराज हो गया।
4. **मीर कासिम द्वारा कर मुक्त व्यापार :–** अंग्रेजों को रिश्वत देकर अन्य व्यापारी भी अपना माल अंग्रेजी कंपनी का बताकर छूट का लाभ उठा रहे थे। मीर कासिम ने इस कारण बंगाल प्रांत में सभी व्यापारियों को करो में छूट दे दी गई। अंग्रेजों को रिश्वत मिलना बंद हो गई और वे मीर कासिम से नाराज हो गये।

5. **मीर कासिम द्वारा अंग्रेजो की हत्या :–** अंग्रेज सेनापति ने मीर कासिम को जब पराजित कर दिया तो उसने पटना पहुंचकर अनेक अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया था इस घटना से भी अंग्रेज मीर कासिम से नाराज थे।
6. **मीर कासिम का शुजाउद्दौला से मिलना :–** मीर कासिम की सहायता के लिए लखनऊ का वजीर शुजाउद्दौला कुछ स्वार्थवश मीर कासिम की सहायता के लिए तैयार हो गया। मुगल सम्राट शाह आलम भी इनके साथ अपनी सेना सहित मिल गया।

बक्सर का युद्ध और महत्व :– उक्त कारणों से 22 अक्टूबर 1764 मे बक्सर नामक स्थान पर ईस्ट इंडिया कंपनी की फौज और भारतीय सेना के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में कंपनी की विजय हुई और संयुक्त भारतीय सेना पराजित हो गई।

बक्सर का युद्ध कंपनी के लिए निर्णायक साबित हुआ तथा ब्रिटिश शासन की नीव भारत में इतनी मजबूत हो गई कि संसार की कोई शक्ति उसे हिला नहीं पाई। भारतीय सेना की कमजोरी और युद्ध नीति की कलई इस युद्ध में खुल गई, बक्सर के युद्ध के बाद पूरे भारत वर्ष में अंग्रेज कंपनी की धाक जम गई, दिल्ली बादशाह अंग्रेजों के संरक्षण में आ गया, कंपनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई और वे वहां के वास्तविक अधिकारी बन गये।

6 अंक

(उपरोक्तानुसार युद्ध के 4 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर 4 अंक एवं महत्व पर 2 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे–4+2=6)

अथवा

हॉलैण्ड से डच जाति के लोगों ने व्यापार करने के उद्देश्य से भारत में प्रवेश करना प्रारंभ किया। पुर्तगाली शक्ति को नष्ट कर डचों ने व्यापार पर अपना एकाधिकार कर लिया। भारत में अंग्रेजों के आने के बाद ''डच'' अंग्रेजों का

मुकाबला नहीं कर सके और उनका पतन शीघ्र हो गया, डचों के पतन के कारण निम्न प्रकार है :–

1. **डच कंपनी का राष्ट्रीय संस्था होना :–** डचों की कंपनी एक राष्ट्रीय संस्था थी जिसमें कुशल नेतृत्व का अभाव था। इस कारण अंग्रेज कंपनी का सफलतापूर्वक मुकाबला नहीं कर सकी।
2. **आन्तरिक अव्यवस्था** :– डच कंपनी के कर्मचारी अधिकारी कंपनी के प्रति वफादार नहीं थे। वे कंपनी के बजाय स्वयं के निजी व्यापार में रूचि लेते थे, कर्मचारियों का वेतन बहुत कम था, इस कारण वे कंपनी के हितों की उपेक्षा करते थे।
3. **साधनों का अभाव :–** डच कंपनी की तुलना में अंग्रेज कंपनी के पास साधन और धन पर्याप्त मात्रा में था, जबकि डचों के पास हमेशा धन और साधनों का अभाव रहा। इस कारण डच अंग्रेजों का मुकाबला नहीं कर सके।
4. **डचों की भारत के प्रति अरूचि** :– डचों की रूचि दक्षिणी–पूर्वी एशिया में अधिक थी इस कारण उन्होंने भारत में रूचि लेना कम कर दिया। भारत के प्रति उनकी अरूचि, डचों के पतन का कारण बनी।
5. **यूरोप में डचों का संघर्ष :–** इंग्लैण्ड और हालैण्ड के मध्य 17वीं शताब्दी में युद्ध प्रारंभ हो गया इस युद्ध में हालैण्ड की शक्ति को गंभीर आघात पहुचा इस युद्ध ने हालैण्ड की शक्ति को काफी कमजोर कर दिया।

उक्त कारणों के कारण भारत में डचों की शक्ति बहुत कम हो गई थी। अतः अंग्रेजों ने आसानी से डचों को भारत से उखाड़ फेंका।

(डचों के विषय में संक्षिप्त लिखने पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 कारण विस्तार से लिखने पर 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 21. कांग्रेस पार्टी द्वारा 1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया गया। इस आंदोलन के प्रमुख कारण निम्नानुसार है :–

1. **प्रथम विश्व युद्ध :–** प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय जनता ने ब्रिटिश सरकार को पूर्ण सहयोग दिया था। ब्रिटिश सरकार द्वारा युद्ध समाप्ति के पश्चात भारतीयों को स्वराज्य प्रदान करने का आश्वासन दिया था, परंतु युद्ध समाप्ति के पश्चात ब्रिटिश सरकार अपने वादे से मुकर गई, अतः भारतीय जनता में असंतोष फैल गया।
2. **1917 ई. की रूसी क्रांति व अन्य घटनाएं :–** 1917 में रूस में क्रांति हुई और वहां की जनता ने वहां के निरंकुश शासन को समाप्त कर दिया, भारतीय जनता को यह अनुभव हुआ कि किस प्रकार आम जनता शक्ति व साहस के आधार पर अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकती है। जर्मनी और आस्ट्रेलिया के तानाशाह शासकों के शासन समाप्त होने का भी भारतीय जनता पर व्यापक प्रभव हुआ।
3. **1919 ई. का अधिनियम :–** 1919 ई. में मॉण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार योजना, भारतीय जनता के स्वराज की मांग को पूर्ण करने की दशा में सर्वथा निष्फल रही, युद्ध के समय ब्रिटिश शासन ने भारत को उत्तरदायी शासन देने का वादा किया था परंतु वादा पूर्ण नहीं किया उल्टे सिक्खों को मुसलमानों के समान पृथक निर्वाचन का अधिकार दे दिया गया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने इसकी कटु आलोचना की इससे देश की जनता में असंतोष फैल गया।
4. **रौलेट एक्ट :–** देश में उठने वाले जन असंतोष को दबाने के लिए रौलेट एक्ट नामक काला कानून पास किया गया। इस कानून के पास होने पर किसी भी व्यक्ति को राजद्रोहात्मक गतिविधि के संदेह में बिना मुकदमा चलाए बंदी बनाने का प्रावधान रखा गया था। अपील, वकील और दलील की व्यवस्था का अन्त कर दिया।
5. **जलियां वाला हत्याकाण्ड :–** 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियां वाला बाग में शांतिपूर्वक चल रही एक जनसभा पर जनरल डायर ने बिना किसी पूर्व चेतावनी के अकारण भीड़ पर गोली चालान करने का आदेश दिया

जिससे हजारों स्त्री, पुरूष, वृद्ध और बच्चे मारे गये, इस घटना ने भारतीयों के ह्रदय में क्रोध की अग्नि तीव्र कर दी।

6. **खिलाफत आंदोलन :–** द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों ने टर्की में विजय प्राप्त करने के पश्चात टर्की में खलीफा का पद समाप्त कर दिया तथा टर्की को विभाजित कर दिया। खलीफा का पद धार्मिक दृष्टि से मुसलमानों के लिए बड़ा सम्मान जनक पद था, भारतीय मुसलमानों ने अंग्रेजों की इस कार्यवाही का विरोध किया तथा खिलाफत आंदोलन की घोषणा की।
7. **अकाल और प्लेग :–** 1917 में देश मे अकाल और प्लेग नामक बिमारी फैल गई। सरकार ने इस त्रासदी में जनता के कष्टों को दूर करने के लिए कोई प्रयास नहीं किए। जनता में इस घटना से आक्रोश बड़ा।
8. **मूल्य वृद्धि :–** द्वितीय विश्वयुद्ध में हुए खर्च की पूर्ति के लिए मूल्यों में वृद्धि कर दी गई। इससे जनता की आर्थिक हालत खराब होने लगी।

6 अंक

(असहयोग आंदोलन की सही तारीख पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 पर विस्तार देने पर पूर्ण 5 अंक प्रापत होंगे–1+5=6)

अथवा

भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के नियम :–

1. **दो अधिराज्यों की स्थापना :–** 15 अगस्त 1947 ई. को भारत तथा पाकिस्तान दो स्वतंत्र राज्य बना दिए जाएंगे तथा ब्रिट्रिश सरकार उन्हें सत्ता सौंप देगी।
2. **संविधान सभाओं का निर्माण** :– दोनों राज्यों को संविधान सभाएं अपने–अपने देशों के लिए संविधान का निर्माण करेगी।
3. **राष्ट्र मण्डल की सदस्यता:–** भारत और पाकिस्तान दोनों राज्यों का राष्ट्र मंडल में बने रहने या छोड़ने की स्वतंत्रता रहेगी।

4. **भारत सचिव पद की समाप्ति** :– भारत सचिव का पद समाप्त कर दिया जाएगा तथा दोनों देशों को ब्रिट्रिश नियंत्रण से मुक्त कर दिया जाएगा।
5. **ब्रिट्रिश शक्ति का अन्तः–** भारत और पाकिस्तान के संबंध में ब्रिट्रिश ब्रिट्रिश सरकार की समस्त शक्तियां समाप्त कर दी गई।
6. **1935 ई. के अधिनियम द्वारा अंतरिम सरकार** :– नए संविधान के बनाने तक 1935 ई. के अधिनियम के अनुसार दोनों को दोनों देशों का शासन चलेगा।
7. **ब्रिट्रिश की सन्धियो की समाप्ति** :– भारत के देशी राज्यों पर से ब्रिटिश संप्रभुता समाप्त कर दी गई तथा पुरानी संधियां समाप्त हो गई।
8. **दोनों देशों में गवर्नर जनरल की व्यवस्था** :– भारत और पाकिस्तान दोनों में एक–एक गवर्नर जनरल होगा। जिसकी नियुक्ति उनके मंत्रिमण्डल की सलाह से की जाएगी।

(भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के नियम के कोई 6 बिन्दुओं का विस्तार देने पर 6 अंक प्राप्त होंगे)

– – – – –